P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-9* December- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

झारखंड में जैविक कृषि
Organic Farming in Jharkhand

रश्मि गोयल
एसोसियेट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
भूगोल विभाग,
शम्भु दयाल पी.जी.कालेज,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश,
भारत

सारांश (Abstract)

जैविक खेती में रासायनिक खाद और कीटनाशक की जगह कुदरती खाद का इस्तेमाल होता है। गोबर की खाद, हरी खाद, कम्पोस्ट, फास्फो कम्पोस्ट, जैविक कीटनाशक का प्रयोग किया जाता है। इससे भूमि की पैदावार शक्ति लम्बे समय तक बनी रहती है। साथ ही पर्यावरण भी संतुलित रहता है। कृषि लागत घटने और उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ने से किसानों को अधिक लाभ मिलता है।

In organic farming, natural fertilizers are used instead of chemical fertilizers and pesticides. Dung manure, green manure, compost, phospho compost, organic pesticides are used. By this, the yield power of the land remains for a long time. At the same time, the environment is also balanced. Farmers get more benefits by decreasing agricultural costs and increasing product quality.

मुख्य शब्द : गोबर की खाद, जैविक खेती, हरी खाद, पर्यावरण, कृषि पद्धति, उत्पादन प्रणाली

Keywords: Dung Manure, Organic Farming, Green Manure, Environment, Farming System, Production System.

प्रस्तावना

जैविक कृषि का अर्थ है– जैविक सम्बन्ध–सूत्रता की क्षमता में कृषि करना। भारत के संदर्भ में जैविक खेती कोई बाह्य कृषि पद्धति नहीं है। हमारे यहॉ सदियों से जैविक खेती होती रही है, अतः इस पद्धति को अपनाने के इच्छुक कृषक को पहले प्राचीन भारतीय और चीनी खेती पद्धतियों परा निगाह डालनी चाहिए जिनको आज भी देश के कुछ भू–भागों में अपनाया जा रहा है। विकासशील देशों के कृषकों के लिये जैविक कृषि की अवधारणा स्पष्ट नहीं है। भारत में इसका अर्थ कार्बनिक खाद का उपयोग करना और कृत्रिम उर्वरकों एवं रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग न करना माना जाता है। लैम्पकिन (1990) ने जैविक कृषि की परिभाषा एक ऐसी उत्पादन प्रणाली के रूप में की है जिसमें उर्वरकों, कीटनाशकों, विकास नियामकों और अतिरिक्त मवेशी–आहार का उपयोग न किया जाए अथवा उनके प्रयोग से बचा जाए। जैविक खेती प्रणाली में फसल–चक, फसल अवशेषों, मवेशियों के मलमूत्र आदि से तैयार खाद, फलीदार पौधों, हरी खाद, खेत में इतर कार्बनिक कचरा और भूमि की आपूर्ति करने और कीटों, खरपतवारों व अन्य कीड़ों पर नियंत्रण के लिये जैव कीट नाशक प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं पर अधिकतम निर्भर रहा जाता है। इस अवधारणा में भूमि को एक जीवन्त प्रणाली समझा जाता है जिसमें लाभदायक जीव समूहों की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाता है।

जैविक कृषि के निम्न तीन प्रमुख पहलू हैं:–

1. अकार्बनिक रासायनिक कारकों के स्थान पर कार्बनिक खाद और अन्य जैविक पदार्थो का उपयोग करना।
2. रासायनिक कीटनाशको के बजाय जैविक पद्धतियों से कीटों पर नियंत्रण करना।
3. भूमि के स्वास्थ्य और कृषि व उत्पादकता में सुधार हेतु व्यापक प्रबन्ध तकनीक अपनाना।

जैविक खेती लाभदायक रहती है। क्योंकि इसमें उत्पादन लागत कम आती है जबकि आधुनिक कृषि की तुलना में पैदावार भी थोड़ी कम होती है। इसकी सफलता कारगर कृषि वैज्ञानिक प्रबन्धन पर निर्भर करती है ताकि भूमि संसाधन की उत्पादकता बढ़ाई जा सके। यह पद्धति आधुनिक खेती से सम्बद्ध जटिल समस्याओं से मुक्त है। और पारिस्थितिकी के अनुकूल है, क्योंकि इसमें

वायु, भूमि और जल संसाधनों का प्रदूषित किए बिना प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

जैविक खेती का उद्देश्य रसायनमुक्त उत्पादों और लाभकारी जैविक सामग्री का प्रयोग करके मृदा स्वास्थ्य में सुधार, भूमि को प्रदूषण से बचाना और फसल उत्पादन को बढ़ावा देना है।

अध्ययन क्षेत्र

इसके उत्तर में बिहार, दक्षिण में उड़ीसा, पूरब में पश्चिम बंगाल और पष्चिम में मध्य प्रदेश है। यह नवगठित राज्य केरल राज्य का लगभग दुगुना और पश्चिम बंगाल के लगभग बराबर है। झारखंड पठारी और असमतल क्षेत्र है। झारखंड का मध्यभाग रॉची और हजारीबाग के पठारों पर अवस्थित है। यह छोटा नागपुर का पठार कहलाता है। झारखंड के उत्तर–पूर्व में राजमहल की पहाड़ियॉ फैली हुई हैं। राजमहल का एक सिरा कुछ समतल है। यह निकटवर्ती गंगा के समतल क्षेत्र का हिस्सा है।

गंगा के मैदान से जुड़े झारखंड का उत्तर पूर्व कुछ समतल है। तो दक्षिण–पश्चिम असमतल और पर्वतीय है क्योंकि यह मध्य भारत के पहाड़ी क्षेत्र से जुड़ा है।

झारखंड का विस्तार

1.	Latitude	-	$23.6102^{o}N$
2.	Longitude	-	$85\text{-}2799^{o}E$
3.	Area	-	79,714 km^2
4.	Height of sea level	-	2140 feet
5.	Population	-	4 Crores.

विषय विवेचन

झारखंडी कृषि की प्राथमिक आवश्यकता है पानी। अब तक की सत्ता व्यवस्था ने झारखंड को औद्योगिक क्षेत्र मानकर यहॉ की कृषि पर ध्यान नहीं दिया, जबकि कृषि की यहॉ काफी सम्भावनाएं हैं। यहॉ वर्षा काफी अच्छी होती है। और कई नदियों में सालभर पानी भी बहता है। इन पहाड़ी नदियों को जगह–जगह बॉध देने से पानी अपना प्राकृतिक ढलान खोजते हुए अपने आप किसान के खेत तक पहुँच जाएगा। इससे कुओं का वर्तमान पानी का स्तर भी ऊपर आ जाएगा और पुराने कुओं का नवीनीकरण भी हो जाएगा मिट्टी परीक्षण के आधार पर यहॉ दर्जनों प्रकार के सूखी कृषि के रास्ते खुल सकते हैं। जिनमें सीमित नमी का उपयोग अधिकतम उपज के लिये किया जा सकता है। यहॉं की मिट्टी बागवानी के लिये भी उपयुक्त है देश के पहाड़ी राज्यों यथा–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश आदि से सबक लेकर झारखंड क्षेत्र की सम्भावनाओं पर तुरन्त अमल करना चाहिए। झारखंड के वनों से लकड़ी के अलावा अनेकों प्रकार के फल–फूलों की उपज यहॉं की आज के स्रोत हैं जो कृषि के पूरक रहे हैं। इनका भी पूरा लाभ झारखंडी नहीं उठा पाते। खनिजों की ही तरह इनसे लाभान्वित होने वाले लोग गैर झारखंडी ही रहे हैं। खनिजों का दायरा केन्द्र सरकार का है, इसलिये उन पर तुरन्त कुछ नहीं किया जा सकता। झारखंड में परती जमीन की उपलब्धता, मिट्टी में जैविक (अंश) की मात्र, रासायनिक खाद एवं दवा का कम उपयोग, छोटे एवं सीमांत किसानों के लिये उपयोगी, केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जैविक खेती को प्रोत्साहन आदि संसाधन है जो जैविक कृषि को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

राष्ट्रीय जैविक खेती अनुसंधान केन्द्र के आंकड़े निम्न प्रकार हैं:–

जैविक खेती करने वाले प्रदेशों की स्थिति

प्रदेश	किसानों की संख्या
झारखंड	2650
ओडिषा	1143
दमन–द्वीव	1131
मणिपुर	76
तमिलनाडु	01
उत्तर प्रदेश	70
पश्चिम बंगाल	67
मध्य प्रदेश	07
राजस्थान	06
हरियाणा	05
महाराष्ट्र	04
छत्तीसगढ़	03
त्रिपुरा	01

ऊपरी टेबल देखने से पता चलता है कि झारखंड के 2650 किसान जैविक खेती कर रहे हैं। किसानों की यह संख्या देश के 25 राज्यों में सबसे अधिक है। दूसरे नम्बर पर ओडिशा में 1143 किसान जैविक खेती अपना चुके हैं तो तीसरे स्थान पर 1131 किसान दमन–द्वीव में हैं हालॉंकि दमन–द्वीव की उपलब्धि इस लिहाज से महत्वपूर्ण है कि इसकी आबादी महज तीन लाख के करीब है जबकि झारखंड की आबादी करीब चार करोड़ है। सबसे अधिक आबादी वाला उत्तर प्रदेश इस मामलें में मणिपुर से पीछे है। यहॉ पर सिर्फ 70 किसान जैविक खेती करने में अपडेट हैं।

प्रधानमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट किसानों की खुशहाली के तहत अभी तक देश के 16 राज्यों में जैविक खेती की जा रही है। इसमें तमिलनाडु, तेलांगाना व त्रिपुरा में एक–एक किसान इस विधि को बढ़ावा दे रहे हैं।

सरकार द्वारा किसानों के लिये ठोस कदम

रघुवर सरकार झारखंड को 2025 तक आर्गेनिक राज्य बनाने के लक्ष्य से काम कर रही है जैविक खेती से जमीन को बंजर होने से बचाया जा सकता है। इसके लिये झारखंड सरकार किसानों को ट्रेंनिग दे रही है। सरकार मेले के द्विारा भी किसानों को जागरूक करने में लगी है जैविक खेती को बढ़ावा देने और कृषि रसायनों पर निर्भरता को कम करने के लिये परम्परागत कृषि विकास योजना की शुरूआत की गयी है। परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत सरकार मिट्टी की सुरक्षा और लोगों के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिये जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है। इसे कलस्टर आधार पर प्रत्येक 50 एकड़ पर कियान्वित किया जा रहा है। इसका लक्ष्य तीन वर्षों की अवधि में 2015–16 से 2017–18 में 5 लाख एकड़ क्षेत्रफल को शामिल करते हुये 10,000 क्लस्टर्स को बढ़ावा देना है। सरकार ने एक पोर्टल http://www.jaivikkheti.in/ पर ई–बाजार नाम से एक

ई–कॉमर्स साईट भी बनाई गई है। इस पोर्टल पर उड़ीसा, झारखंड और छत्तीसगढ के किसानों ने सबसे अधिक पंजीकरण कराया है।

निष्कर्ष

झारखंड में जैविक कृषि का अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं किः–

1. खेती में प्रकृति की भूमिका का लाभ उठाना।
2. भूमि को, एक जीवन प्रणाली समझना न कि रसायनों का निष्क्रिय भण्डार बनाना।
3. जैव प्रणाली पर आधारित परिस्थितिकी के अनुकूल प्रौद्योगिकी
4. अनुकूलतम उत्पादन और बुनियादी भोजन में अनुकूलतम पोषण स्तर के लिये भूमि की उर्वरता बनाए रखना।
5. झारखंड की अम्लीम मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश के साथ–साथ किसानों को जैविक खाद एवं चूना के प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

झारखंड – समाज संस्कृति और विकास विद्या भूषण
झारखंड–हेमंत
कहानी झारखंड आन्दोलन की इतिहास से साक्षत्कार – बलवीर दत्त
आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल– डॉ0 रामदयाल मुण्डा
कृषि भूगोल – आर0 सी0 तिवारी, बी0 एन0 सिंह
दैनिक जागरण, अमर उजाला